ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 2ndApril 2018, Revised on 4th April 2018; Accepted 5thApril 2018

आलेख

विद्यालयी शिक्षा में नवाचार

* **राजेश कुमार सिंह**, व्याख्याता (शिक्षा संकाय)
राजीव एकेडमी फॉर टीचर एजुकेशन, मथुरा
Email - rajs6564@gmail.com, Mobile - 9411044332

Key words: *कण्ठस्थ, सकारात्मक, उत्पादक एवं निमार्ण आदि।*

शिक्षा में नवीन विचारों एवं प्रयोगों के आधार पर जो अमूलचूल परिवर्तन उत्पन्न होता है और शिक्षा का परिमार्जन विद्यार्थी के व्यवहारिक व तर्कज्ञान को बढ़ाने के साथ साथ विषय व प्रकरण की सार्थकता में वृद्वि करता है। वह नवाचार कहलाता है। शिक्षा व्यक्ति को परिमार्जित करने का महान कार्य करती है। भारत में यह कार्य अनन्त काल से होता रहा है आज कल की शिक्षा में हमारे युवाजनों की बढ़ती अरूचि से पता चलता है कि उनके मन की स्थिति क्या है। इसी दृष्टि से शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अब नया प्रयोग करने के लिए शिक्षा शास्त्रियों को ध्यान आकृष्ट हो रहा है।

नवाचार क्यों आवश्यक है इसके क्या क्या कारण है इसके लिए हमें अपनी वैदिक शिक्षा प्रणाली की ओर नज़र डालनी होगी। सर्वप्रथम वैदिक काल में शिक्षकों/ऋषि/मुनियों/की कक्षाओं की बात करना समीचीन होगा जिनकी एक कक्षा में दस–दस हजार शिष्य एक साथ शिक्षा लेते थे। महर्षि भारद्वाज की कक्षा में एक साथ हजारों शिष्य अध्ययन किया करते थे। वैदिक शिक्षा काल का विद्यार्थी वृहद पाढय वस्तु को कुछ ही समय में कण्ठस्थ कर लिया करते थे।

आधुनिक काल तक आते आते स्थिति ये है कि अब विद्यार्थी कक्षा में बैठकर पढ़ने से कतराता है। ऐसी स्थिति हम शिक्षकों के व्यवहार को ही उत्तरदायी ठहराती है। शिक्षा शास्त्रियों ने छात्र छात्रओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए शिक्षा में कुछ नई चीजें जोड़ दी है जिन्हें नवाचार का नाम दिया गया है। जिसके द्वारा आज के विद्यार्थी को एक दिशा प्रदान की जाती है

नवाचार विधि या पद्वति होने के साथ साथ मानव जीवन की आवश्यकता है हमारे चाहे नचाहे यह होता ही है परिवर्तन प्रकृित का नियम है परिवर्तन नवीनता लिए होता है योजित रूप से करने पर यह सकारात्मक, उत्पादक एवं निमार्ण का घोतक होता है अन्यथा नकारात्मक, अनउत्पादक एवं विरोध के रूप में परिलक्षित होता है।

शिक्षा मानव विकास को दिशा देती है भविश्य की चुनौतीयों के लिए तैयार करती है विषय किसी क्षेत्र विशेष में निपुणता या प्रभुत्व प्रदान करता है वर्तमान में विषयों का विस्तार वृहद रूप से हुआ है। जिसकों परामपरागत विधि प्रविधियों के माध्यम से सार्थक रूप से अधिगमित नही कराया जा सकता है या परिस्थियों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने के माध्यमों व

प्ररूपों में परिवर्तन करना अति आवश्यक है शिक्षा की समस्या/आवश्यकता एक समान नहीं है भाषा, क्षेत्र, अर्थिक, मानसिक एवं सामाजिक आधारों के कारण शिक्षा की समस्या/अवश्यकता भी अनेक प्रकार की है।

नवाचार इन्ही आवश्यकता और समस्याओं के समाधान के रूप में एक समाने आता है शिक्षा के माध्यम से बौद्विकता एवं अनुभव प्राप्त होते हैं वह चिन्तन के रूप में सामने आता है विषय की नई सोच, नए सन्र्दभ बनाने व उन्हें व्यवहारिक रूप प्रदान करने के लिए नवाचार माध्यम है। नवाचार वह नवीन आचरण या व्यवहार है जो पूर्व की स्थिति में सार्थक परिवर्तन का घोतक होता है। नवाचार का धेय कुन्द पड चुकी विषय वस्तु विधि प्रविधि एवं प्रक्रिया को वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप पुनः जीवान्त व सक्रिय करना होता है समय व परिस्थिति विषय में स्थिलता उत्पन्न कर देती है जिसे परिवर्तित परिस्थितियों में नई पीढ़ी स्वीकार करने में असहजता अनुभव करती है असहजता की स्थिति के बाहर निकलने में नवाचार पद्वति ही सार्थक प्रयास के रूप में परिलक्षित होती है।

विद्यालय के विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार के द्वारा परिवर्तन अपनी अवश्यता एव अपेक्षाओं के अनुरूप किया जाता है नवाचार की कोई निश्चित व निर्धारित विधि या प्रारूप नही होता जिस प्रकार की समस्या या आवश्यकता होती है उसी के अनुसार समाधान निकाला जाता है यह व्यक्ति के विवके व समय की मांग के अनुसार अपना कार्य करता है अनुशासन, शिक्षण, अधिगम, मल्यूाकन एवं पाढ्यक्रम इत्यादि क्षेत्र में नवाचार के माध्यम से शिक्षा की प्रक्रिया को सार्थक बनाया जाता है उद्वेश्यों को प्राप्त किया जाता है।

विद्यालय में नित विभिन्न प्रकार की परिस्थितियां उत्पन्न होती है जिनको समाना विद्यालय सदस्यों को करना होता है। विद्यालय में पढने वाले सभी बालकों का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं बौद्विक स्तर समान नहीं होता इस कारण उन्हें अधिगम कराने, अनुशासित करने, व उसका सवार्गीण विकास करने के विधियॉ भी समान नही हो सकती इसलिए विभिन्न एवं नवीन विधियों के साथ साथ नवीनतावादी (नवाचारी) होना चाहिए। जो परिवर्तन एवं परिमार्जन को सहज स्वीकार करने के साथ उसे उत्पन्न करने की क्षमता भी रखता हो।

*** Corresponding Author:**
राजेश कुमार सिंह
प्रवक्ता (शिक्षा संकाय)
राजीव एकेडमी फॉर टीचर एजुकेशन, मथुरा
Email - rajs6564@gmail.com, Mobile - 9411044332